संस्कार भारती

(कला एवं साहित्य की अखिल भारतीय संस्था)

अखिल भारतीय साधारण सभा

कालावधिः

युगाब्द 5126, कार्तिक कृष्ण द्वितीया, तृतीया-चतुर्थी संवत् 2081

19 एवं 20 अक्टूबर, 2024

अ.भा. महामंत्री श्री अश्विन दलवी द्वारा प्रस्तुत

वार्षिक प्रतिवेदन

2023-24

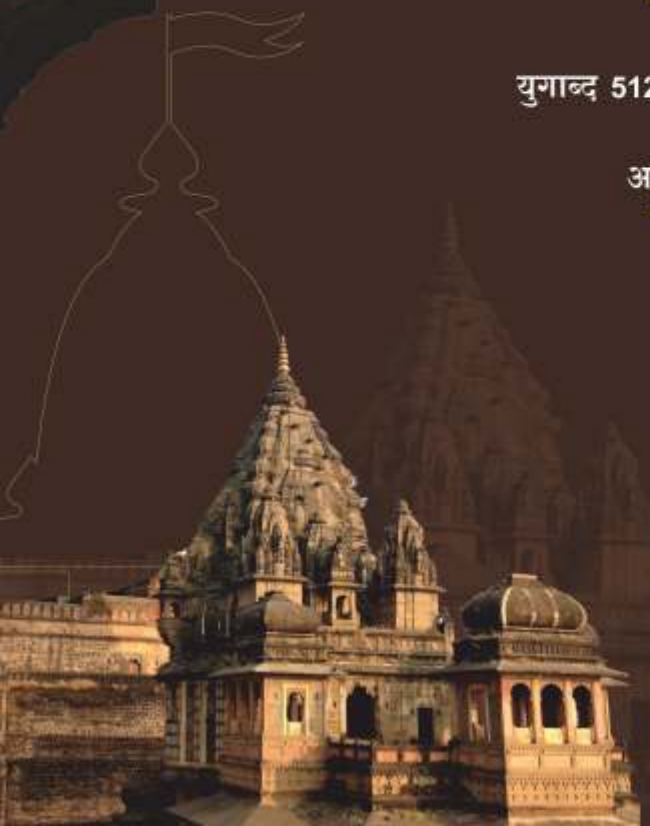

महामंत्री प्रतिवेदन

आदरणीय श्री अध्यक्ष महोदय, माननीय श्री संपर्क अधिकारी, सभी माननीय अखिल भारतीय पदाधिकारी गण, सभी माननीय विशेष आमंत्रित गण, तथा संस्कार भारती की साधारण सभा के समस्त गणमान्य सदस्य।

आप सभी का गालव ऋषि की तपोस्थली कहे जानेवाले जयपुर शहर में स्थित ''अभिनन्दन भवन'' के इस प्रांगण में आयोजित अखिल भारतीय साधारण सभा में हार्दिक स्वागत व् अभिवादन हैं। आशा हैं की सभी के पूर्ण सहयोग एवं सहभाग के साथ प्रसन्न वातावरण में हम अपनी यह बैठक सम्पन्न करेंगे। हर्ष का विषय हैं कि हम इस वर्ष की साधारण सभा भारत की एक प्रमुख सांस्कृतिक राजधानी माने जाने वाले जयपुर शहर में आयोजित कर रहे हैं। पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जन्मभूमि तथा संत दादू दयाल की कर्म भूमि जयपुर अपनी सांस्कृतिक विरासत, धार्मिक आस्थाओं – मान्यताओं, शास्त्रीय व लोक कलाओं, स्थापत्य, अपने वैभव तथा अपने इतिहास के लिए विश्व में अपना विशेष स्थान रखता हैं। शहर के श्री मोती डूंगरी गणेश जी व श्री गोविन्द देव जी को स्मरण कर उनके श्री चरणों में प्रणाम करते हैं और उनका आशीर्वाद हम सभी का मार्ग प्रशस्त करेगा, ऐसा विश्वास करते हैं।

पिछले १ वर्ष में राष्ट्रजीवन में, समाज में, तथा अपने संगठन में महत्वपूर्ण योगदान देनेवाले ऐसे महानुभावों का, जिनका किन्ही कारणों से देहावसान हुआ हैं, उनकी पुण्यस्मृति में हम श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

पिछले एक वर्ष में देश भर में अपनी गतिविधियों का लेखा जोखा आप सभी के सम्मुख प्रतिवेदन के रूप में रखूँगा। बताने में अत्यंत प्रसन्नता होती हैं कि हर वर्ष की भाँति हम इस वर्ष भी संस्कार भारती के संगठनात्मक कार्य, कार्यक्रम, उपक्रम, उत्सव, प्रशिक्षण इत्यादि विभिन्न आयामों को गति देने में सफल हुए हैं। इनमे से प्रगति की कुछ बातों का उल्लेख इस प्रतिवेदन में करने का प्रयास किया हैं।

अखिल भारतीय कलासाधक संगम

३ से ५ वर्षों में एक बार आयोजित होने वाले संस्कार भारती के विशेष उपक्रम ''कलासाधक संगम'' का आयोजन इस वर्ष दिनांक १ फ़रवरी से ४ फ़रवरी २०२४ को "द आर्ट ऑफ़ लिविंग इंटरनेशनल सेंटर", बैंगलुरु में संपन्न हुआ। "सामाजिक समरसता" विषय (थीम) पर आधारित इस कार्यक्रम में गुरुदेव श्री श्री रविशंकर जी का आशीर्वचन तथा परमपूज्य सरसंघचालक जी का सानिध्य तथा मार्गदर्शन हम सभी को प्राप्त हुआ। इस संगम में कुल प्रतिभागिता ११४३ रही जिनमें ७८० पुरुष व ३६३ महिलाएँ रहीं।

अखिल भारतीय कलासाधक संगम

कला को विषय में बांधने से उनकी अभिव्यक्ति में बाधा आती है, इस भ्रम को मिटाने में इस कलासाधक संगम की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इस कार्यक्रम में आयोजित विभिन्न सत्रों में पारंपरिक कलाओं के नाते "सामाजिक समरसता" विषय पर ही समस्त मंचीय प्रस्तुतियाँ, दृश्यकला प्रदर्शनियाँ, साहित्यिक चर्चा, गोष्ठी, पुस्तक विमोचन इत्यादि हुईं। नवीन प्रयोगों के नाते इस बार सिनेमा, कैलीग्राफ़ी, फोटोग्राफी, मीम्स-रिल्स, तथा शार्ट फिल्म मेकिंग का समावेश भी किया गया। सामाजिक समरसता जैसे संवेदनशील विषय की विभिन्न कलाओं के माध्यम से प्रस्तुति के कारण "कला समाज जागरण का भी माध्यम है " इस संस्कार भारती के विमर्श को स्थापित करने में इस कलासाधक संगम की महत्वपूर्ण भूमिका रही ।

कलासाधक संगम की कुछ विशेष प्रस्तुतियों में पूर्वोत्तर लोक नृत्य की अद्भुद प्रस्तुति के हम साक्ष्य बने जिसमें पूर्वोत्तर के ८ राज्यों के १२० कलाकारों ने एक साथ एक मंच पर, एक ही रचना पर समरसता का संदेश देते हुए नृत्य प्रस्तुत किया। "सामाजिक समरसता निर्माण में कला और साहित्य की भूमिका" विषय पर संगोष्ठी का आयोजन हुआ। समरसता विषय पर युवा कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमें भारत के युवा कवियों ने विषय पर अपना काव्य पाठ किया। भारत के विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों की समरसता संबंधित स्थानीय बोध कथाओं का संकलन किया गया और पुस्तक के रूप में विमोचन किया गया। समाज में ट्रांसजेंडर समानता पर सुश्री रेशमा प्रसाद जी द्वारा लघु व्याख्यान हुआ। कार्यक्रमों की श्रृंखला का समापन ''समरसता शोभा यात्रा'' से हुआ जिसमें हर प्रांत अपनी पारंपरिक वेशभूषा में गीत गाते, नृत्य करते, अपने सांस्कृतिक क्षेत्र की विशेषता को दर्शाते शोभा यात्रा में प्रतिभागी बने ।

भरतमुनी सम्मान

भरतमुनी सम्मान पंचम वेद के नाम से प्रतिष्ठापित नाट्यशास्त्र के रचयिता महर्षि भरत मुनि को समर्पित है। भरतमुनि द्वारा रचित नाट्यशास्त्र भारतीय कला जगत और कला विमर्श का आधार ग्रंथ है। संस्कार भारती द्वारा अखिल भारतीय स्तर का यह पुरस्कार मंचीय, दृश्य, लोक व जनजातीय कलाएँ, तथा साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए इस वर्ष से प्रारंभ किए गया है। यह पुरस्कार कलाकार को उनकी कला साधना, अपने कार्य क्षेत्र में विशिष्ट योगदान तथा उनकी कला के माध्यम से समाज को उनके विशिष्ट योगदान को ध्यान में रखते हुए प्रदान किया जाता है। ३ फरवरी २०२४ को इस वर्ष का यह सम्मान पूज्यनीय सरसंघ चालक जी द्वारा दृश्य कला के लिए मुंबई के श्री विजय दशरथ आचरेकर एवं लोक कला के लिए सिंधुदुर्ग के श्री गणपत सखाराम मसगे को बंगलुरु में आयोजित कला साधक संगम में प्रदान किया गया। सम्मान स्वरुप भरत मुनि का प्रतीक चिन्ह, सम्मान पत्र एवं सम्मान राशि प्रदान की गई। इस कार्यक्रम में दोनों ही कलाकारों के जीवन पर संक्षिप्त चलचित्र भी दिखाया गया।

वैचारिक विमर्श कार्यशाला

कला साहित्य जगत में अपने विमर्श को स्थापित करने की दृष्टि से गतवर्ष कुछ प्रयास हुए हैं। विमर्श स्थापित करने हेतु प्रत्येक क्षेत्र में सघन अध्ययन की प्रक्रिया विकसित करनी होगी, इस बात को संघ द्वारा मई मास में आयोजित बैठक में रखा गया। संघ की योजना से देशभर में चल रहे विविध अध्ययन केन्द्रों की इस बैठक में कला साहित्य के अध्ययन केंद्र प्रारंभ करने की बात मुख्य रूप से सामने आई। इस प्रक्रिया को गति देते हुए ०८ अगस्त २०२४ को गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति राजघाट, नई दिल्ली के आईन्स्टाइन हॉल में देशभर के कुछ चयनित कार्यकर्ताओं की कला में विमर्शों पर चिंतन हेतु "वैचारिक विमर्श कार्यशाला" आयोजित की गयी। इस कार्यशाला में भारत की कला परम्परा, विश्व की अन्य कला धाराएँ, आक्रमण के कालखंड में कलाओं की भूमिका, कला में प्रचलित विमर्श आदि विषयों की प्रस्तुति एवं प्रतिभागी कार्यकर्ताओं द्वारा मंथन हुआ। विमर्श के अखिल भारतीय संयोजक श्री मुकुल कानिटकर जी इस कार्यशाला में पूर्ण समय उपस्थित थे। सर्वश्री सच्चिदानंद जोशी जी, प्रफुल्ल केतकर जी, नंदकुमार जी, आशुतोष भटनागर जी ने इन विषयों की अभ्यासपूर्ण प्रस्तुति की। श्री मुकुल कानिटकर जी ने संगठन के लिए करणीय कार्यों पर चर्चा की। इस कार्यशाला के अनुवर्तन की योजनाये भी चल रही हैं। विश्वास है कि अगले वर्ष इस दिशा में और आगे बढ़ेंगे।

अखिल भारतीय रंगोली कार्यशाला

दिनांक २०-२१-२२ सितंबर २०२४ को चेन्नई स्थित IIT परिसर में तीन दिवसीय अखिल भारतीय रंगोली कार्यशाला का आयोजन हुआ। २० राज्यों के १३४ प्रतिभागियों ने इसमें भाग लिया जिनमे ५७ प्रतिभागी IIT के ही विद्यार्थी थे। IIT संस्थान के निदेशक प्रोफेसर कामाकोटि ने संस्कार भारती को शुभकामनाएँ देते हुए इस उपक्रम को हर वर्ष इस संस्थान में आयोजित करने का प्रस्ताव भी दिया।

१३४ प्रतिभागियों में ७८ प्रतिभागी संस्कार भारती के लिए नये थे और समस्त प्रतिभागियों ने इस तरह की कार्यशाला अपने ज़िले में आयोजित करने की घोषणा करी।

पोलेंड सांस्कृतिक दल दुनायोवी द्वारा सांस्कृतिक आदान प्रदान

हमारी भारतीय सनातन संस्कृति का विस्तार विश्वव्यापी रहा हैं। यूरोप के स्लेविक और बाल्टिक देशों के मूल समुदाय आज भी भारतीय संस्कृति से निकटता का अनुभव करते हैं। सांस्कृतिक आदान प्रदान के उद्देश्य से इस वर्ष पोलेंड के एक सांस्कृतिक दल "दुनयोवी" को भारत निमंत्रित किया गया था। पोलेंड के यह स्लाविक समूह मूल रूप से प्रकृति पूजक हैं और इनकी पौराणिक मान्यताएँ, देवी देवता, रीति रिवाज आदि भारतीय जनजातीय परंपराओं से बहुत मेल खाते हैं। मथुरा, काशी तथा हरिद्वार में इस समूह द्वारा पारंपरिक सांगीतिक प्रस्तुतियाँ दी गईं और विभिन्न प्रस्तुतियों द्वारा भारतीय संगीत तथा नृत्य से इन्हें परिचित कराया गया।

कश्मीर कार्यविस्तार प्रवास

अनुच्छेद ३७० हटने के पश्चात कश्मीर में स्थिति सामान्य होती दिखाई दे रही हैं। हाल ही में सफलतापुर्वक संपन्न हुए विधानसभा चुनाव इसका प्रमाण हैं। पिछले कुछ समय से जम्मू कश्मीर के अपने कार्यकर्ताओं ने प्रयासपूर्वक श्रीनगर में संपर्क स्थापित किया जिसके परिणामस्वरूप कलासाधक संगम में श्रीनगर का प्रतिनिधित्व हुआ। अखिल भारतीय संगठन मंत्री श्री अभिजित गोखले जी के संगठनात्मक प्रवास के अंतर्गत श्रीनगर के ऐतिहासिक टैगोर हाल के बैठक सभागार में सम्पर्कित कश्मीर ईकाई के कलासाधकों से भेंट तथा परिचर्चा का आयोजन हुआ। संगीत, साहित्य, चित्रकला, उर्दू कैलीग्राफी के कलासाधक बैठक में उपस्थित रहे और सभी ने अपने अपने विचार रखे। श्री अभिजित जी ने सभी को संस्कार भारती का परिचय कराया। कलासाधक संगम में सम्मिलित हुए श्री आमिर वानी जी की इस बैठक के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका रही।

इसी प्रवास में विशेष भेंट कार्यक्रम के अन्तर्गत, अख़रोट की लकड़ी पर नक्काशी करने वाले तथा गुरु शिष्य परम्परा को निभाने वाले पद्मश्री श्री. गुलाम नबी डार जी के सफाकदल स्थित निवास स्थान जाकर सम्मान किया गया। कुछ वर्ष पूर्व इस परिसर में हिन्दू का प्रवेश लगभग असंभव था। इस प्रवास को सफल बनाने में जम्मू कश्मीर के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ कुलदीप रैना जी एवं महामंत्री श्री अजय भारती जी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। विश्वास है की आगामी कालखंड में कश्मीर क्षेत्र में भी संस्कार भारती का कार्य सुचारू रूप से प्रारंभ होगा ।

कारगिल शौर्य यात्रा

दिनांक २५ जुलाई २०२४ को संस्कार भारती एवं पूर्व सैनिक सेवा परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में शौर्ययात्र का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न संगठनों के कार्यकर्ता सम्मिलित रहे। संस्कार भारती के कलाकारों द्वारा कला प्रस्तुतियां दी गई एवं शौर्ययात्रा में पाँच वाहनों में देशभक्ति गीत एवं जयघोष प्रस्तुत किए गए। संस्कार भारती के कलाकारों द्वारा निर्मित शौर्यरथ आकर्षण का केंद्र रहा। संस्कार भारती के प्रयास से पाँच कारगिल वीर हुतात्मा परिवारों से संपर्क किया गया और उन्हें जम्मू के शौर्य दिवस के कार्यक्रम में सम्मानित किया गया ।

विगत कुछ वर्षों से सामाजिक तथा राष्ट्रीय विषय और चरित्रों को सिनेमा के माध्यम से प्रगट करने का साहस कई निर्देशकों ने दिखाया हैं। सामान्य जनों को ऐसी फिल्मों का परिचय कराना और अधिक से अधिक लोग विपरीत परिस्थिति में भी इन फिल्मों को देखें यह अत्यंत चुनौतीपूर्ण कार्य हैं। पश्चिम महाराष्ट्र प्रान्त ने इस दृष्टि से कुछ सफल प्रयोग किये हैं। इन प्रयोगों के अंतर्गत केरल स्टोरी, कश्मीर फाइल्स, बस्तर द नक्सल स्टोरी, स्वातंत्र्यवीर सावरकर, स्वर गन्धर्व सुधीर फड़के जैसे चित्रपटों के स्वतंत्र आयोजन किये गए। इन स्क्रीनिंग्स में प्रतिष्ठित कलाकारों तथा पत्रकार बंधुओं को निमंत्रित कर इन चित्रपटों की समीक्षा करने का आग्रह किया गया जिसके परिणाम स्वरुप इन चित्रपटों को साहस व बल मिला।

१ जून २०२४ को जम्मू विश्वविद्यालय में फिल्म आयाम के अंतर्गत संस्कार भारती जम्मू कश्मीर एवं युवा जम्मू कश्मीर द्वारा फिल्म डाक्यूमेंट्री एवं लघु फिल्म का संकलन किया गया। इन डाक्यूमेंट्री एवं लघु फिल्मों में कश्मीर घाटी की स्थिति, पलायन, घरों और मंदिरों की दशा, नशाखोरी, पर्यावरण, और विशेष वाल्मीकि को काफी सराहा गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मुंबई के फिल्म निर्देशक श्री रवि खेमू रहे जिन्होंने अपने वक्तव्य में जम्मू कश्मीर को सहयोग देने की बात कही।

झारखण्ड प्रान्त में युवाओं के लिए लघु चित्र महोत्सव का आयोजन किया गया। इस महोत्सव में सामाजिक समरसता, चरित्र निर्माण, सनातन संस्कृति, स्वतंत्रता सेनानियों पर आधारित १५ लघु फिल्मों का प्रदर्शन किया गया। जमशेदपुर शहर तथा ग्रामीण अंचल के विभिन्न विद्यालयों से लगभग ६०० विद्यार्थी, शिक्षक तथा अभिभावकों ने इस महोत्सव का लाभ लिया।

सिनेमा गतिविधि के उपक्रम

अत्यंत प्रसन्नता की बात हैं की सिनेमा जगत में संस्कार भारती कार्य का निरंतर विस्तार हो रहा हैं। विमर्श प्रस्थापित करने में सिनेमा को एक प्रबल व सक्षम माध्यम माना जाता हैं। एक ओर डाक्यूमेंट्री, शार्ट फिल्म, बायोपिक आदि के माध्यम से अनेक सामाजिक तथा राष्ट्रीय विषय और चरित्र समाज के सम्मुख प्रस्तुत हो रहें हैं, वही दूसरी ओर हिन्दू धर्म, संस्कृति पर आघात करनेवाली अनेक फिल्मों का भी निर्माण हो रहा हैं। इस दृष्टि से पिछले कुछ महीनों में प्रान्तों में विभिन्न उपक्रमों का आयोजन हुआ हैं।

तमिलनाडु प्रांत के फ़िल्म विभाग ने आभासी माध्यम से सिनेमा पर चर्चाएँ प्रारंभ करी हैं जिसमें CBFC दल और संस्कार भारती के सदस्यों सहित, समाज के विभिन्न वर्ग के लोग जैसे विद्यार्थी, गृहिणी, मीडियाजन, इत्यादि इसके प्रतिभागी रहते हैं। इस मासिक चर्चा सत्र में ३५ से ५० सदस्य सक्रिय रूप से भागीदारी लेते हैं तथा मीडिया के विद्यार्थी सिनेमा जगत के प्रतिष्ठित व्यक्तियों से साक्षात्कार करते हैं। गत चर्चाओं में फ़िल्म जगत की अनेक जानी मानी हस्तियों जैसे श्रीमती लक्ष्मी रामकृष्णन, और व्यावसायिक जैसे स्टंट मास्टर, नृत्य संयोजक, फ़िल्म वितरक आदि ने सक्रिय रूप से अपनी भागीदारी दी हैं। विवादास्पद सिनेमाओं पर चर्चा तथा उन पर वांछनीय कार्यवाही करना भी इस समूह के प्रमुख उद्देश्यों में सम्मिलित है, जिसके परिणाम स्वरूप CBFC में इस समूह का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देना प्रारभ हुआ हैं। सिनेमा में भारतीय संस्कृति व परंपराओं के संरक्षण हेतु यह उपक्रम सिने टॉकीज के अन्तर्गत आयोजित होता हैं।

विगत कुछ वर्षों से सामाजिक तथा राष्ट्रीय विषय और चरित्रों को सिनेमा के माध्यम से प्रगट करने का साहस कई निर्देशकों ने दिखाया हैं। सामान्य जनों को ऐसी फिल्मों का परिचय कराना और अधिक से अधिक लोग विपरीत परिस्थिति में भी इन फिल्मों को देखें यह अत्यंत चुनौतीपूर्ण कार्य हैं। पश्चिम महाराष्ट्र प्रान्त ने इस दृष्टि से कुछ सफल प्रयोग किये हैं। इन प्रयोगों के अंतर्गत केरल स्टोरी, कश्मीर फाइल्स, बस्तर द नक्सल स्टोरी, स्वातंत्र्यवीर सावरकर, स्वर गन्धर्व सुधीर फड़के जैसे चित्रपटों के स्वतंत्र आयोजन किये गए। इन स्क्रीनिंग्स में प्रतिष्ठित कलाकारों तथा पत्रकार बंधुओं को निमंत्रित कर इन चित्रपटों की समीक्षा करने का आग्रह किया गया जिसके परिणाम स्वरुप इन चित्रपटों को साहस व बल मिला।

सिनेमा गतिविधि के उपक्रम

१ जून २०२४ को जम्मू विश्वविद्यालय में फिल्म आयाम के अंतर्गत संस्कार भारती जम्मू कश्मीर एवं युवा जम्मू कश्मीर द्वारा फिल्म डाक्यूमेंट्री एवं लघु फिल्म का संकलन किया गया। इन डाक्यूमेंट्री एवं लघु फिल्मों में कश्मीर घाटी की स्थिति, पलायन, घरों और मंदिरों की दशा, नशाखोरी, पर्यावरण, और विशेष वाल्मीकि को काफी सराहा गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मुंबई के फिल्म निर्देशक श्री रवि खेमू रहे जिन्होंने अपने वक्तव्य में जम्मू कश्मीर को सहयोग देने की बात कही।

झारखण्ड प्रान्त में युवाओं के लिए लघु चित्र महोत्सव का आयोजन किया गया। इस महोत्सव में सामाजिक समरसता, चरित्र निर्माण, सनातन संस्कृति, स्वतंत्रता सेनानियों पर आधारित १५ लघु फिल्मों का प्रदर्शन किया गया। जमशेदपुर शहर तथा ग्रामीण अंचल के विभिन्न विद्यालयों से लगभग ६०० विद्यार्थी, शिक्षक तथा अभिभावकों ने इस महोत्सव का लाभ लिया।

नृत्य विधा उपक्रम

प्रान्तों में विधाओं के अलग अलग कार्यक्रम आयोजित होते रहते हैं। मध्य भारत प्रान्त में नृत्य विधा के विविध आयोजन अत्यंत उत्साहवर्धक हैं। प्रान्त के प्रत्येक जिले में नृत्य प्रस्तुतियाँ, कार्यशालाएं, मासिक संगोष्ठियां, नृत्य विधा समारोह आदि कार्यक्रम आयोजित हुए हैं। इन कार्यक्रमों में छाऊ, भरतनाट्यम, ओडिसी, कथक जैसी विविध शास्त्रीय नृत्य शैलियों की विस्तृत जानकारी देने का प्रयास किया गया। ग्वालियर में आयोजित एक मासिक संगोष्ठी में नृत्य आचार्य डॉक्टर भगवान दास मानिक जी द्वारा रायगढ़ घराने की बंदिशों पर व्याख्यान दिया गया, साथ ही नृत्य की बारीकियों से नवोदित कलाकारों को अवगत कराया गया। विविध कार्यशाला तथा संगोष्ठियों में पद्मश्री नलिनी एवं कमलिनी जी, अपर्णा चतुर्वेदी जी, मधुरिमा विश्वास जी आदि वरिष्ठ नृत्यांगनाओं की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

गुरु पूर्णिमा के अवसर पर एक दिवसीय प्रांतीय नृत्य विधा समारोह का आयोजन भोपाल जिले में किया गया। वसुधैव कुटुंबकम एवं समरसता पर आधारित इस समारोह में लगभग ६० प्रतिभागियों ने भाग लेकर इसे सफल बनाया। एक सत्र में वरिष्ठ कथक नृत्यांगना सुश्री अनुराधा वी सिंह जी ने नवोदित कलाकारों को कथक में अपने भविष्य निर्माण पर मार्गदर्शन किया। सायंकाल विभिन्न जिलों से आये प्रतिभागियों ने वसुधैव कुटुंबकम एवं समरसता पर आधारित नृत्य प्रस्तुत किये। वरिष्ठ नृत्यांगना सुश्री अल्पना बाजपेयी जी इस समारोह की मुख्य अतिथि रही।

आंचलिक भाषा / बोली के समृद्धि का कला उत्सव

बिहार की समस्त आंचलिक भाषा/बोली को बल देने, युवा पीढ़ी को मातृभाषा के प्रति जागरूक करने तथा सामाजिक परिवर्तन के पंच प्रण (सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण, कुटुंब प्रबोधन, नागरिक कर्तव्य और स्वदेशी जीवन शैली) जैसे महत्वपूर्ण विमर्शों पर कला जगत का ध्यान आकर्षित करने की दृष्टि से इस वर्ष सितंबर मास में कला उत्सव का आयोजन किया गया। भागलपुर में अंगिका, गया में मगही, पश्चिमी चंपारण (बेतिया) में भोजपुरी तथा पूर्णिया में मिथिला कला उत्सव का भव्य एवं प्रभावी आयोजन संपन्न हुआ। इन सभी कला उत्सवों में बिहार के ३४ जिलों से कुल २२५ कार्यकर्ता समेत ११८७ प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। पंच प्रण के विषयों पर कुल २८५ से अधिक चित्र प्रदर्शनी, ११ नाटक, १०४ कवियों की गोष्ठी, १२ लोकगाथाएं, ४७ नृत्य दल, ९ संवाद सत्र और ७४ समूह की सांगीतिक प्रस्तुति आयोजित की गई। इससे इतर स्थानीय नागरिक समाज के १५६३ विशिष्टजनों का भी आगमन हुआ।

कला उत्सव की विशिष्टता

१) मंजूषा, मिथिला, भोजपुरी, पटना कलम, छापा कला, सिक्की कला, मूर्ति कला आदि प्रमुख स्थानीय चित्रशैली में पहली बार संबंधित विषयों का चित्रण युवा कलाकारों द्वारा किया गया।

२) मगही में ४० से अधिक काव्य रचना की पुस्तिका "मगही संस्कार तूलिका" का प्रकाशन किया गया।

३) भोजपुरी कला उत्सव में सभी प्रतिनिधियों का आवास सिंघाछापर गांव में ग्रामीणों के घर पर किया गया था तथा सभी प्रतिनिधियों द्वारा प्रत्येक दरवाजे पर ३०० से ज्यादा फलदार वृक्षों का पौधारोपण किया गया। इस उत्सव में सबसे ज्यादा चर्चित रही लोक परम्परा आधारित भोजपुरी भूषाचार (फैशन शो)।

४) मिथिला कला उत्सव में सबला सीता को स्थापित करने के उद्देश्य से सम्मान प्रतीक में अतिथियों को धनुर्धारी और वेदवंती सीता दाई (बिटिया) की प्रतिमा दी गई। इसी उत्सव में अंतरराष्ट्रीय हास्य कलाकार राज सोनी द्वारा पपेट के माध्यम से पंच प्रण विषयों की अनूठी प्रस्तुति की गई।

५) समरसता भाव की दृष्टि से बुनकर शिल्प, माटी कला, पत्थरकट्टी, हस्त कला आदि उपेक्षित कला विधाओं के कलाकारों समेत कार्यक्रम से जुड़े रसोइया, सफाईकर्मी, पंडाल निर्माता, तकनीकी टीम से जुड़े लोगों का विशेष सम्मान किया गया।

भरतमुनि का नाट्यशास्त्र - नाट्य संगोष्ठी

संस्कार भारती, जयपुर प्रान्त द्वारा दिनाकं माघ शुक्ल पूर्णिमा एवं फाल्गुन कृष्ण एकम् संवत् २०८० तदानुसार २४ एव २५ फरवरी २०२४ को"भरत मुनि का नाट्यशास्त्र" विषय पर दो दिवसीय प्रदेश स्तरीय आवासीय नाट्य संगोष्ठी का आयोजन सेवा सदन, जयपुर में किया गया। इसी विषय पर आधारित एक नाट्य लेखन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। राजस्थान के लगभग ३० विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों के नाट्य विभागों में सम्पर्क कर इस विषय पर नाटक लेखकों से उनकी रचनाएं मंगवाई गई और पुरस्कार हेतु परिणाम तैयार करवाया गया। दिनांक २४ फरवरी को प्रातः ११ बजे संगोष्ठी का उद्घाटन राजस्थान विधान सभा के माननीय मुख्य सचेतक श्री जोगेश्वर गर्ग द्वारा किया गया। उद्घाटन सत्र में संस्कार भारती के अखिल भारतीय नाट्यविधा संयोजक श्री प्रमोद पंवार मुख्य वक्ता थे तथा मुख्य अतिथि वरिष्ठ रंगकर्मी श्री भारत रत्न भार्गव रहे।

दोनों दिन निम्नानुसार ५ विषयाधारित सत्र हुए, जिनमें प्रत्येक सत्र में एक वक्ता, एक समीक्षक तथा एक अध्यक्ष रहे।

नाट्यशास्त्र का काल और परिवेश विषय पर श्री भारतरत्न भार्गव ने, "नाट्यशास्त्र की सामाजिक अवधारणा" पर श्री जितेन्द्र थडानी ने, "नाट्यशास्त्र की धार्मिक अवधारणा" पर श्री विशाल भट्ट ने तथा "नाट्यशास्त्र की समकालीन परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता" विषय पर डॉ. कपिल शर्मा ने विषय प्रतिपादन किया। अलग अलग सत्रों में श्री नंदकिशारे पाण्डेय, डॉ. सुरेश बबलानी, श्री राजीव आचार्य, तथा डॉ. इन्दुशेखर तत्पुरूष ने अध्यक्षता की। दिनांक २५.०२.२०२४ को सायंकाल ५ बजे नाट्य संगोष्ठी का समापन हुआ तथा रात्रि ८ बजे वरिष्ठ रंगकर्मी श्री दीपक भारद्वाज द्वारा निर्देषित नाटक "भगवदज्जुकीयम " का मंचन किया गया।

रामोत्सव

उपरोक्त समस्त कार्यक्रमों तथा उपक्रमों के अतिरिक्त पूरे देश में संस्कार भारती ने २२ जनवरी को रामलला प्रतिष्ठापना के उपलक्ष्य में अपने अपने स्थानों पर "रामोत्सव" विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से मनाया।

अ. भा. चिंतन बैठक

युगानुकुल परिवर्तन किसी भी जीवंत संगठन का लक्षण हैं। समाज की आवश्यकताओं व अपेक्षाओं को ध्यान में रखते हुए संगठन में उचित बदलाव करने की दृष्टि से संस्कार भारती ने दिसंबर २०२२ में अपनी चिंतन प्रक्रिया अखिल भारतीय चिंतन बैठक के रूप में प्रारम्भ करी। इन बैठकों में अपने वैचारिक कार्य का स्वरुप, हम सम्पूर्ण कला जगत का संगठन बने इस दृष्टि अपनी कार्यशैली में नवीन बातों को जोड़ना, अपने नियमित उपक्रम, कार्यकर्ता प्रशिक्षण आदि अनेक बिन्दुओं पर गंभीर चर्चा हुई।

प्रत्येक क्षेत्र में इन बैठकों के माध्यम से उपरोक्त विषयों समेत अनेक विषयों की चर्चाएं हुई तथा संगठन में वांछित बदलाव, नवाचार, इत्यादि पर सुझाव आये। गत ११-१२ अप्रैल २०२४ को नैनीताल में प्रत्येक क्षेत्र के प्रतिनिधियों के साथ हुई चिंतन बैठक में इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए निर्णय हेतु प्रारूप तैयार हुआ। चिंतन प्रक्रिया के अंतिम चरण में इस साधारण सभा के अनुमोदन के पश्चात नवीन उत्साह और उर्जा से नयी बातों का स्वागत करते हुए हम कला जगत में अपना प्रभाव निर्माण करने की दृष्टि से आगे बढ़ेंगे यह विश्वास हैं।

संस्कार भारती की पहचान, कला संस्कृति के क्षेत्र में कार्य करने वाले देश के सबसे बड़े संगठन के रूप में स्थापित हैं। संस्कार भारती एक वैचारिक संगठन हैं और कार्य क्षेत्र हैं कला संस्कृति। इसीलिए "भारतीय कला दृष्टी के आधार पर कला जगत का सञ्चालन हो" यह हमारा मूल उद्देश्य हैं। भारत जैसे वैविध्यपूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने का कार्य यही कला संस्कृति करती हैं। और इसीलिए दायित्व भी हैं की युगों युगों से चला आ रहा यह सांस्कृतिक प्रवाह बना रहे। हम सामूहिक प्रयासों से संगठन के विस्तार के साथ संगठन के मूल विचार व गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दे ही रहे हैं। देश काल परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए युगानुकूल रहकर हम आगे की योजनाओं को मूर्त रूप देने में सफल रहेंगे, ऐसी आशा व कामना करता हूँ। इदं न मम, राष्ट्राय स्वाहा के भाव से की गई संस्कृति सेवा में ईश्वर हम सबके साथ हैं, ऐसा विश्वास हैं।

धन्यवाद

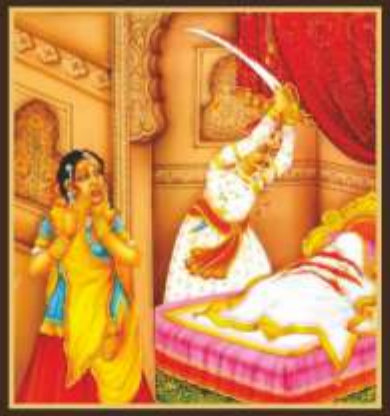

शक्ति भक्ति उत्सर्ग त्याग की भूमि ललित ललाम!
गौरव उन्नत भाल सदा ही हे माँ!तुझे प्रणाम!

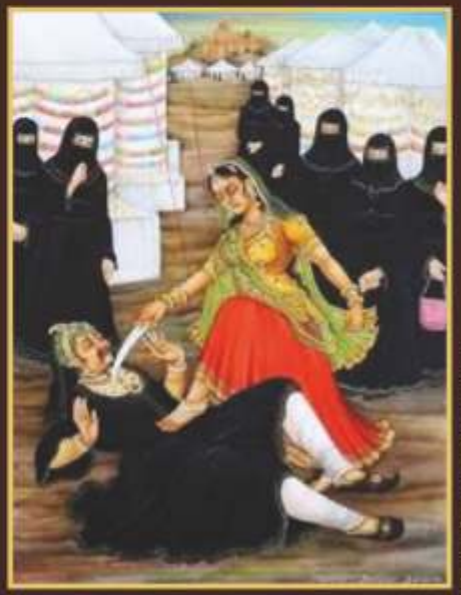

design factory # 8290999000